महामंदी (1929) और यूरोप की राजनीतिक अर्थव्यवस्था का रूपांतरण
The Great Depression (1929) and Transformation of European Political Economy

1929 में अमेरिका के शेयर बाजार के ध्वंस के साथ प्रारंभ हुई महामंदी शीघ्र ही वैश्विक आर्थिक संकट में परिवर्तित हो गई। यूरोप, जो अमेरिकी ऋण और निवेश पर निर्भर था, विशेष रूप से प्रभावित हुआ। औद्योगिक उत्पादन में गिरावट, बैंकिंग संकट और भारी बेरोजगारी ने सामाजिक और राजनीतिक अस्थिरता को जन्म दिया।

जर्मनी में अमेरिकी ऋण की वापसी के कारण बैंक विफल हुए और बेरोजगारी लाखों तक पहुँच गई। ब्रिटेन ने स्वर्ण मानक (Gold Standard) को त्याग दिया। फ्रांस ने प्रारंभिक वर्षों में अपेक्षाकृत स्थिरता बनाए रखी, किंतु अंततः वह भी संकट से अछूता नहीं रहा।

महामंदी ने उदार पूंजीवादी व्यवस्था की विश्वसनीयता को गहरा आघात पहुँचाया। कई देशों ने संरक्षणवाद (Protectionism) और आर्थिक राष्ट्रवाद की नीतियाँ अपनाईं। अंतरराष्ट्रीय व्यापार में तीव्र गिरावट आई। इससे वैश्विक सहयोग की भावना कमजोर हुई और राष्ट्रवाद को बल मिला।

आर्थिक विचारधारा के स्तर पर भी महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। जॉन मेनार्ड कीन्स ने यह तर्क दिया कि बाजार स्वतः संतुलन स्थापित नहीं करता और राज्य को सक्रिय हस्तक्षेप करना चाहिए। कीन्सियन अर्थशास्त्र ने बाद के दशकों में कल्याणकारी राज्य की नींव रखी।

राजनीतिक प्रभाव भी गहरे थे। जर्मनी में नाजीवाद का उदय, इटली में फासीवाद का सुदृढ़ीकरण और पूर्वी यूरोप में अधिनायकवादी शासन की वृद्धि—ये सभी आंशिक रूप से आर्थिक संकट से जुड़े थे। लोकतांत्रिक संस्थाएँ आर्थिक अस्थिरता के दबाव में कमजोर पड़ीं।

इतिहासलेखन में कुछ विद्वान महामंदी को द्वितीय विश्व युद्ध की पृष्ठभूमि मानते हैं, क्योंकि इसने अंतरराष्ट्रीय सहयोग को नष्ट किया और उग्र राष्ट्रवाद को जन्म दिया। अन्य इतिहासकार इसे वैश्विक पूंजीवाद के चक्रीय संकट के रूप में देखते हैं।

निष्कर्षतः महामंदी केवल आर्थिक घटना नहीं थी, बल्कि इसने यूरोप की राजनीतिक संरचना, वैचारिक दिशा और अंतरराष्ट्रीय संबंधों को गहराई से प्रभावित किया।